

→ पूरी व्यापार वा

Ajanta

Page No.

Date

→ J.B. Say → व्यापार के नियम

→ व्यापार में [] पूरी अपनी मीठी हक्की
खोज लेती है

(Supply creates its own demand.)

से कि व्यापार का नियम

→ 1929 में आई आर्थिक मिश्री

कारबी → अधिक उत्पादन (Over production)

→ बाहरी इकाइ उत्पादन के कारबी

→ विश्व भूमि की समाप्ति

→ अर्थव्यवस्था में [] भूमि की आवश्यकता

→ बंदीजगारी

→ Background

प्रथम विश्वयुद्ध में भूमि समाजीका व्यापार

(1918 - 1929)

→ 1934 में किंस की पुस्तक आती है,
"समाज सिद्धांत"

* General theory of Employment, Interest
and Money.

→ इस पुस्तक में प्रमिलित विद्यान के दर्शन
मान्यताओं को नकार दिया जाता है और
एक नया विद्यान का निर्माण किया जाता है।
इसे ही कीन्स के रोजगार विद्यान
कहते हैं।

कीन्स का रोजगार विद्यान

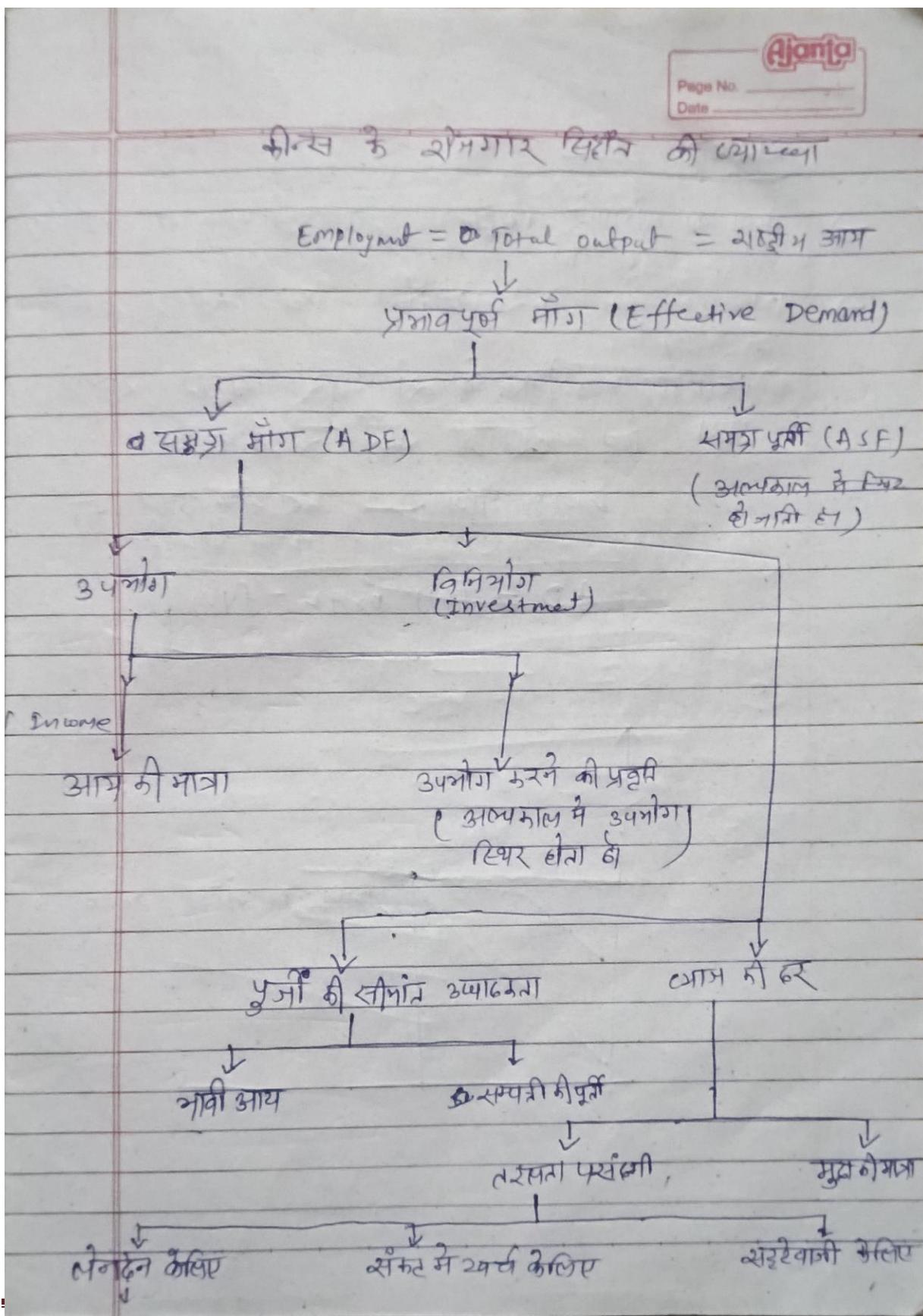
→ कीन्स के रोजगार ~~विद्यान~~ = Output = National
पर अध्यारित है। प्रमावपुर्ण मांग

प्रमावपुर्ण मांग → मांग के बीच की त्रिवर्तन मांग ही है।

मांगवाए / शर्करा

→ अपूर्ण प्रविभागिका की बजार

(b) मुद्रा अवास प्रणाली के द्वारा मुद्रा लि विद्या
नी दरमा है।

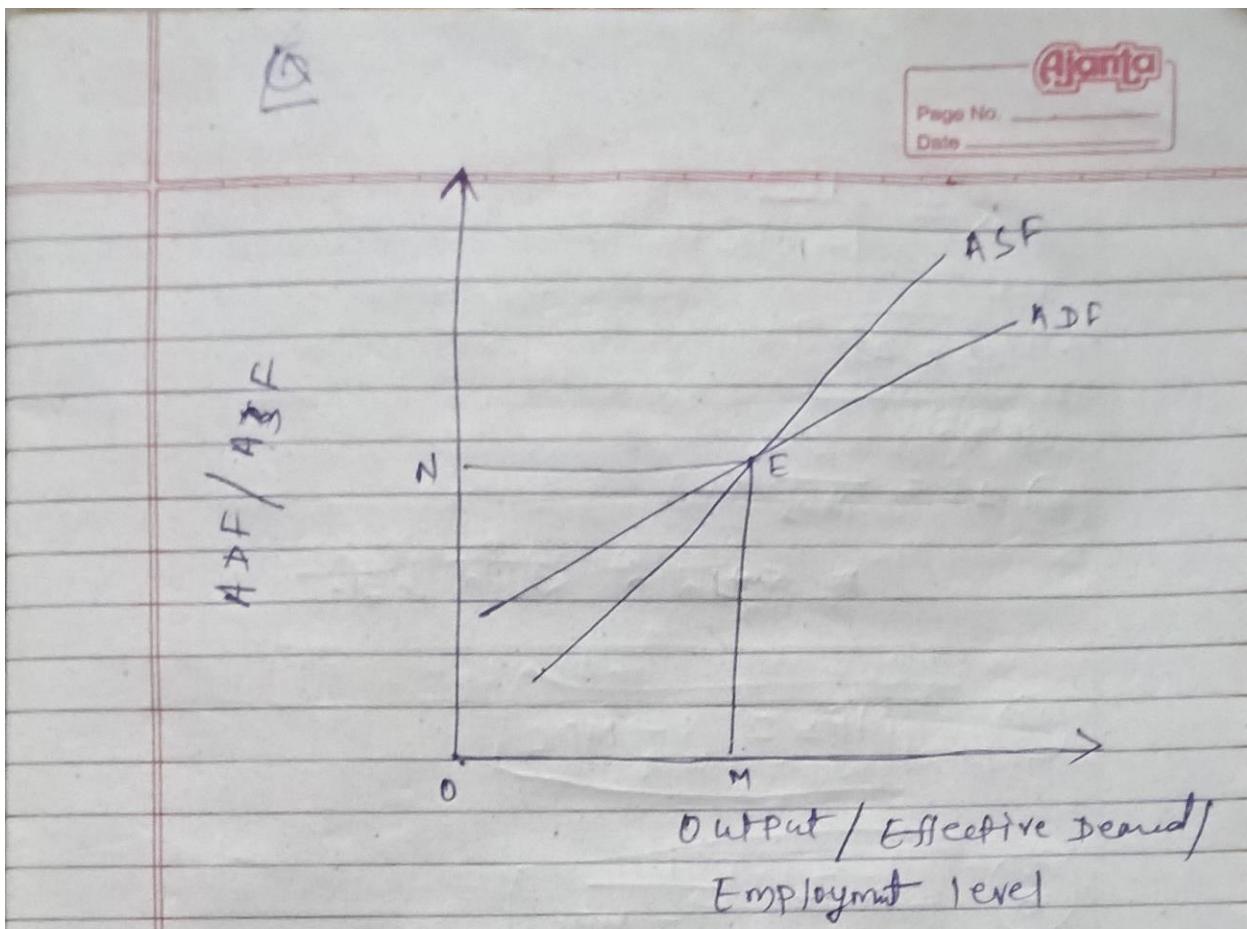


अंतराल

- अन्य के बीच विट्ठि प्रभाव पूर्ण मौग पर निर्भवता
- प्रभाव पूर्ण मौग के समय मौग एवं शुभम पूर्ण अन्तर है।
 इसलिए अन्य के बीच विट्ठि समय मौग एवं शुभम पूर्ण पर अधिक।

समय मौग — आय का फलन होता है

$AD = f(N) \text{ or } AD = f(Y)$



मुलाकू (Multiplair) / विनियोग गुणक
Investment multiplier

→ इसे कहा जाता है कि विनियोग का गुणक है।

→ विनियोग और उत्पादन का अनुपात है।

परमाणु - विनियोग में वृद्धि की पर
आय में दुष्ट वृद्धि के बराबर है।
गुणक कहते हैं।

$$\textcircled{1} \quad \Delta I = \Delta Y \quad \textcircled{2} \quad K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta

Page No. _____
Date _____

$$K = \frac{1}{1-MPC}$$

$$\Delta I = \Delta S$$

(3) $\Delta I = \frac{1}{MPS}$

विद्युत की विनाशक प्रकृति

(4) $MPS = 1 - MPC$

(6) $K = \frac{1}{1 - MPC}$

(5) $K = \frac{1}{MPS}$ ∴ $MPS = 1 - MPC$

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta

Page No. _____
Date 13-11-2024

* मुद्रा : → मुद्रा किसी भी देश की सरकार के हाथों वॉला मुद्रा घोषित करता है।

Ex- भारत की मुद्रा रूपया

मुद्रा से अनिप्राय यह है कि सरकार हारा घोषित वर्तु या करेंसी, जो बैंकिंग तथा वित्तीय संस्थाओं के कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

* मुद्रा के कार्य →

- ① विनियमित का माहियम
- ② मुल्य मापने का कार्य
- ③ मुगतान का माहियम
- ④ मुल्य का सचयन

* मुद्रा के परिमाण सिद्धांत :-
मुद्रा परिमाण में हमलोग मुद्रा के मुल्यों का अहययन करते हैं। पिसर का अनुसार, मुद्रा का मुल्य उसकी ग्राहकी द्वारा वाचित करता है।

* मुद्रा परिमाण के सिद्धांत

- | | |
|--------------------------|-------------------------|
| ① इरविन फिसर का सिद्धांत | ① कॉकिन का सिद्धांत |
| ② प्रतिछित्र सिद्धांत | ② मार्क्झिल का सिद्धांत |
| ③ लेन्देन सिद्धांत | ③ पी-मू का सिद्धांत |
| ④ क्रयशक्ति सिद्धांत | ④ शॉबिंस का सिद्धांत |
| | ⑤ किंस का सिद्धांत |
| | ⑥ नगद रोप सिद्धांत |

* मुद्रा परिमाण का प्रतिछित्र सिद्धांत इस सिद्धांत को कई नामों से जाना जाता है

जैसे:- मुद्रा का लेन देन सिद्धांत
क्रयशक्ति सिद्धांत
फिसर का सिद्धांत
इयार्टि।

इस सिद्धांत को इरविन फिसर ने 1911 में अपनी पुस्तक

The Purchasing Power of Money
में मुद्रा परिमाण सिद्धांत आर्थिक वाते द्वितीय इन्होंने 42 जब

यहाँ में मुद्रा का परिमाण उठता है तो कीमत इतनी भी आवश्यक वहता है तथा यह मुद्रा तरीं क्षम्य घट जाता है।

Ajanta
Page No. _____
Date _____

* फिस्त - मुद्रा की कीमत में मुद्रा बढ़ता है तो उत्तर भवना भवना होती है।

* अर्थशास्त्र में संतुलन के लिए :-
Supply और Demand बराबर होनी चाहिए।

अब,
मुद्रा के Supply $\rightarrow MV$
 M = मुद्रा की मात्रा
 V = मुद्रा चालान का रेज़

मुद्रा के Demand = प्रकृति की कीमत (P) \times प्रकृति की मात्रा (T)
 $= P \times T$

मुद्रा परिमाण का सिद्धांत $= MV = PT$
 $= MV = PT$

* मुद्रा परिमाण के कंबिज के सिद्धांत:-
कंबिज के मुद्रा परिमाण सिद्धांत की नगद शैष विद्यालय के कहते हैं।
इस सिद्धांत का कंबिज निवारण विद्यालय के अर्थशास्त्रियों, जैसे:-
मार्शल, पीमू, कि-स, रॉबर्ट्स ने किया।
इसलिए इसे कंबिज समीकरण भी कहते हैं।

पिसर के मुद्रा
 परिमाण सिद्धांत को इंग्लैण्ड
 के कॉन्विन विश्वविद्यालय के
 अर्थशास्त्रीयों ने आलोचना की
 अन्दोबे बताया कि पिसर हमें
 कौनों में लोगों के द्वारा रखे
 जाने वाले बगद कोष को
 कोई महत्व नहीं मिली। कॉन्विन
 विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्रीयों का

मत था कि मुद्रा के मूल्य का
 निर्धारण क्रघशक्ति नहीं करती है।
 वलिक मुद्रा का निर्धारण केवल
 वह मात्रा करती है जो बगद
 के रूप में लोगों के द्वारा
 सचय किया जाता है।

* कॉन्विन ट्रिट्टिकोण से मुद्रा परिमाण
 संतुलन :-

मुद्रा की पूर्ति :- नोट + सिक्का + माँग

मुद्रा की माँग :- मुद्रा का वास्तविक मूल्य

आर्थित अर्थव्यवस्था में
 सभी लोग अपनी आय का
 जितना मात्र बगद के रूप में

रक्तवा की चाहते हैं उसे ही मुझे
माँग लहा जाता है।

* केंबिज के सिद्धांत :- विनियम
अर्थशास्त्रीयों के क्रियन्वयन इष्टिकोण

$$① \text{ मार्शल समीकरण} \rightarrow M = kY$$

जहाँ,

M = मुद्रा की माँग

k = मुद्रा की माँग

Y = आय

$$② \text{ पीछ का समीकरण} \rightarrow P = \frac{kR}{M}$$

P = मुद्रा की मात्रा

k = वास्तविक आय का लगाए मात्रा

R = कुल वास्तविक आय

M = मुद्रा की कुल मात्रा

$$③ \text{ रॉबर्ट सेल का समीकरण} : \rightarrow M = PKT$$

जहाँ,

M = मुद्रा की मात्रा

P = सामान्य कूलय संख्या

K = व्यापार करने के माँग

T = कुल व्यापार

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta

Page No. _____

Date _____

④ कीस का समीकरण $\rightarrow N = P/K + RK$

N = मुद्रा की दायरे

P = प्रत्येक उपयोग की रकाई

K = उपयोग की इन रकाईयों की सं.

γ = बैंक में जमा गया निधि

K' = उपयोग करने के लिए बैंक में रखा गया जमा।

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta
Page No. _____
Date _____

* की-स का या भुक्ता और कीमत

→ की-स के अनुसार भुक्ता की मौज़ा व्यक्ति के लाजार में किसी द्वारा तरल में किया जाता हो। की-स के अनुसार, यह व्यक्ति भुक्ता को तरल अवश्य में रखना चाहा परंपरा है। इसलिए की-स के भुक्ता की मौज़ा व्यक्ति के तरलना परंपरा या तरलना अभिमान सिद्धांत सहने है।

की-स के अनुसार, लोगों की भुक्ता के लिए तरल मौज़ा नहीं उद्देश्यीय है। लिए किया जाता है।

[① लेन - देन का उद्देश्य (L_t)
 ② अक्षर का लिए या बातिहारी के लिए (L_p)
 ③ सहेकाजी के लिए (L_s)]

→ Demand from Money = $L_t + L_p + L_s (L)$

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta

Page No. _____
Date _____

की-सा के अनुसार,
प्रथम दो उद्देश्यों आय ५२
निर्भर करता है जो कि स्थिर
अपेक्षा में होती है और केवल
सट्टा बाजार के उद्देश्य ठेक की
गई मुद्रा की माँग द्वारा की
जब पर निर्भर करता है
आर्थिक,

$$L_t = f(Y) \text{ and } L_p = f(Y)$$

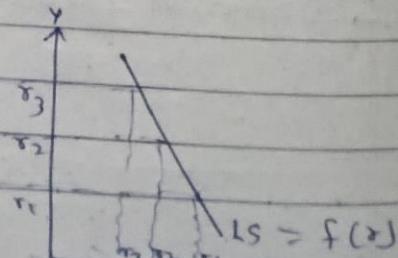
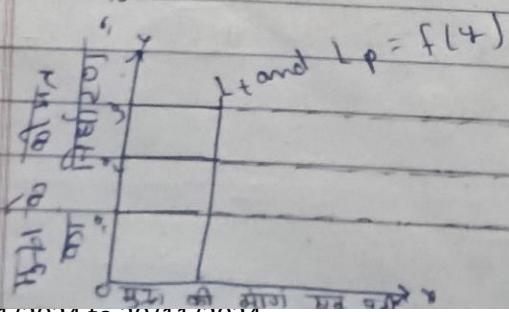
यहाँ Y = आय

$$L_s = f(Y)$$

Y = द्वारा की ५२

अब,

चुनिं ल और L_s के द्वितीय ने नमस्ति
की-सा के अनुसार, मुद्रा की
माँग को केवल द्वारा द्वारा की
५२ प्रभावित करता है।
इसे निवालितित द्वारा की
कर्ता समझ सकते हैं —



Paper – 3 (Macro Economics)

C.W

Ajanta
Page No. _____
Date _____

उपचुपत चित्र के आनुसार हमें बात की जानकारी होती है कि मुझे की मौजा को केवल ह्याज की ८२ दी प्रभागित करती है।

ह्याज की ८२ और मुझे की मौजा के बीच विपरीत संबंध होते हैं। साथ ही माथे हमें यह भी कहते हैं कि ह्याज की ८२ निर्धारित करने के लिए ८१ मुझे की कीमत निर्धारित करने के लिए ह्याज की ८२ अवश्यक है ही मौजा।

* केंद्रीय बैंक → केंद्रीय बैंक किसी ने [REDACTED] की बैंकिंग व्यवस्था की सफलता अपर अचानक उसे देखी। के बैंकिंग इन मौद्रिक किया जाता है को नियंत्रित करने वाले संस्थाएँ को उस देश का कहते हैं।

Note → आप के हाथ में आज का [REDACTED] के जास्तीर्जीर्जी बैंक (RBI) है।

Ajanta
Page No. _____
Date _____

विदेशी रुपी वर्षों के लिए विभिन्न विधियां विकास करने की आवश्यकता है।

विभिन्न विधियां विकास करने के लिए विभिन्न विधियां विकास करने की आवश्यकता है।

- ① ग्राम पञ्चायतीय विकास के लिए
- ② सार्वजनिक विकास के लिए
- ③ मोर्चिक विकास के लिए
- ④ विकास के लिए
- ⑤ बैंकिंग प्रणाली को सुधारने के लिए
- ⑥ व्यापारी-व्यापारी विकास के लिए
- ⑦ आर्थिक व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए
- ⑧ रिवियर संबंधी सुधाराओं का संचालन के लिए
- ⑨ शोषण खाता की व्यवस्था के लिए
- ⑩ विदेशी रुपी मोर्चिक विकास के लिए
- ⑪ केंद्रीय बँडा की व्यवस्था के लिए
- ⑫ ग्राम वर्गाएँ के संवर्गाएँ के लिए
- ⑬ सार्वजनिक-सार्वजनिक पुरातंत्र

Paper – 3 (Macro Economics)

Ajanta
Page No. _____
Date _____

* केन्द्रीय बैंक का कार्य →

वाणिज्य बैंक → वाणिज्य बैंक के बैंक हैं जो जनजीवन प्राप्त करने के लिए उद्देश्य से खुदा तथा आपका व्यापार करते हैं।

* वाणिज्य बैंक का कार्य —

- ① जमा एवं कारबूलना
- ② विभिन्न मामा के लिए लोन
- ③ खेज — विवरण, विक्री विक्री, वाल्य लिए लिए, व्यापारिक
- ④ बोनस लिए लिए
- ⑤ सटकारी प्रतिशुतियों में नियोग
- ⑥ लिंगियों का निर्माण
- ⑦ अनुग्रह लिए लिए
- ⑧ बहुकुल धार्ताओं की लिए लिए
- ⑨ व्यापारिक स्कृयन लिए लिए
- ⑩ आर्थिक विकास में लोगों का विकास

* व्यापारिक विकास का लिए लिए

→ ① व्यापारिक विकास का लिए लिए

② व्यापारिक विकास का लिए लिए

CW

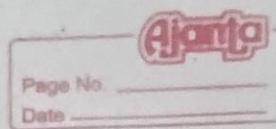
- (१) दुनिया निर्माण में प्रोत्तराएँ
- (२) विनियोग के अंदर समाजी
- (३) [Redacted] शेषों में कोषों का
- (४) विनियोग
- (५) देशगांव में ग्रन्थि कला
- (६) सरकार को सदाचारा करना
- (७) ग्राम्य को लिखित नियमों का
- (८) शुद्धिधा करना
- (९) आर्थिक जीवन में उच्चता लाना
- (१०) विदेशी व्यापार को प्रोत्तराएँ लाना
- (११) उदासी का लिकाम

[28-11-2024]

(३) मौखिक वीति :- के-दीय
किसी भी देश के के-दीय
बैंक के द्वारा मुद्रा बाजार
के लिए जो वीति बनाई
जाती है उसे मौखिक वीति
कहते हैं।

Note:- भारत के के-दीय बैंक भारतीय
रिजर्व बैंक है।

4 राजनीतिक वीति :- सरकार द्वारा
बनाये गये नियमों को राजनीतिक वीति
कहते हैं।



* मौखिक नीति के उद्देश्य :-

- (1) रोजगार के स्थाई रूप बनाये रखने के लिए
- (2) मुलायों में स्थिरता के लिए
- (3) विनियमों में स्थिरता के लिए
- (4) आर्थिक स्थिरता के लिए
- (5) आर्थिक विकास के लिए

* मौखिक नीति के साधन :-
मौखिक नीति के द्वे साधन हैं -

- (1) मार्केट / कृषिकालीन साधन
- (2) नियन्त्रण साधन

Paper – 3 (Macro Economics)

Page No. 29 Date 29/11/2024

* मॉटिवेशन के साधन :- मॉटिवेशन के साधन होते हैं।

① मात्रात्मक साधन (Quantitative Tools) & Quantitative
② गुणात्मक साधन (Qualitative Tools)

① मात्रात्मक साधन :- मॉटिवेशन के मात्रात्मक साधन में सार्व नियमण के लिए अपनाया जाता है। इस साधन के अंतर्गत सार्व की मात्रा और उसकी कीमत की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए अपनाया जाता है। इसके अंतर्गत नियन्त्रित किया जाता है।

① बैंक की दृष्टि :-
① बैंक की दृष्टि को :- इसके अंतर्गत बैंक की दृष्टि नियन्त्रित किया जाता है। इससे जिस दृष्टि पर RBI के बैंक कर्म लेने होते हैं। यह अपकालिन दृष्टि लेना होता है।

② रेपो दृष्टि :- इस दृष्टि पर RBI से अपकालिन दृष्टि लेने होते हैं। यों होता है। सामान्यतः 90 दिनों का होता है।

③ Reverse रेपो :- यह एक वैध नियम है, जो दो बैंकों के बीच से जुटा जाता है, जिनमें एक दूसरे द्वारा बैंक को लेने के लिए अपना तंत्रज्ञान देता है।

④ (MSF) मार्जिनल ट्रेडिंग के फ़िलिंग :-
इसके समय अन्य बैंकों द्वारा आपातकाल के लिए भी उपलब्ध होता है।

⑤ चर अनुपात की किसी :-
इसके अंतर्गत एक नियम अनुपात में कठिनी बैंक अपने मालियों को पूरे आवश्यकता देता है। इस नियम के अनुपात में बैंकों को अपने मालियों के पात बढ़ाव देता है। इसके बाद इसके संदर्भ में CRR (Cash Reserve Ratio) बढ़ाव देता है।

⑥ तेल अनुपात की → यह किसी अंतर्गत कठिनी बैंक अन्य बैंकों के लिए एक नियम है। इस अनुपात में अपने बाल अवधि का अनुपात देता है। इसके बाद अपने बाल अवधि का अनुपात देता है।

Paper – 3 (Macro Economics)



भारत के संरक्षण के इसे SLR कहते हैं।

NOTE:- सितंबर 2024 के अनुसार,

बैंक ८२ - 6.75 %.

रेपो ८२ - 6.50 %.

रीवर्स रेपो ८२ - 3.35 %.

MSF ८२ - 6.75 %

CRR - 4.5 %

SLR - 18 %

NOTE - मौजूदा नीति की दर :- महाराष्ट्र का व्युक्तमानुपाती होता है।

③ खुले बाजार की नीति \rightarrow इस नीति के अन्तर्गत लापिली बैंक RBI के नियंत्रण से सख्ती से प्रतिश्रुतियों का सरीर-विकास करती है।

Date - 30-11-2024

+ मौजूदा नीति के ज्ञानमुक्त साधन :-
मौजूदा नीति में केवल मार्केट
साधनों का ही प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि ज्ञानमुक्त साधनों
का भी प्रयोग किया जाता है।
जो भी ज्ञानमुक्त साधन का उपयोग करता है वह भारतीय राज्य

इस द्यावहार को दिखाता है
जो निम्नलिखित है —

① विभिन्न कर्ताओं के द्वारा अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक के साथ आलगा आलगा विभिन्न घटनों पर विविध रूप से आवायन की द्वारा जिससे आवायनकरण में उपायमय परिवर्तन किया जा सके।

② सारबंध की राशनिंग — सारबंध नियंत्रण के लिए सारबंध की राशनिंग किया जाता है जिसके अंतर्गत व्यापारिक आवायनकर्ताओं के आधार पर सारबंध की नियंत्रण की अधिकतम सीमा नियंत्रित कर देती है। और इसके लिए विभिन्न बैंकों द्वारा व्यापसायों के लिए कठोर नियंत्रित किये जाते हैं।

③ नेतृत्व द्वारा → केंद्रीय बैंक (व्यापारिक द्वारा द्वारा देती है कि इसे सही सीमा कितनी 200-A है, किन-11 बढ़ाना - घटाना है, व्यापारिक बैंक द्वारा द्वारा देती है, कि इसकी ताकि

Paper – 3 (Macro Economics)

			Ajanta	
			Page No. _____	Date _____
(4)	गुणात्मक स्तरिया का नहीं मानता जिसका आ	कारबाह → जब को सुना है तो केवल उत्तम परिणाम हो सकता है।	के-दीया वाकी है कि केवल उत्तम परिणाम है।	वै